कहानी

सतरंगे ख्वाब

रेणु गुप्ता

क्षमा जी, हमें आपकी बेटी अन्विता बहुत पसंद आई. बताइए रोका किस दिन का रखना है?

जी आशा जी, रोके से पहले मुझे आपको एक बेहद इंपोर्टेन्ट बात बतानी है. जी ऐसा है कि अन्विता को हमने एक गरीब कपल से गोद लिया है. मेरी बेटी ने आपके बेटे को यह बात पहले ही बता दी है. मैंने सोचा मैं आपको भी बता दूँ.

क्या? अन्विता आपकी बेटी नहीं? कुल, गोत्र और जाति क्या है उसके असली पेरेंट्स की. यह रोका अभी नहीं हो सकता. मैं पहले अन्विता के माँ-बाप से मिलूँगी. उनके कुल-गोत्र-जाति के पता लगने के बाद ही इसका फैसला होगा.

मम्मा.. यह आप क्या कह रही हैं? अन्विता एक हाई ली एजुकेटेड एमबीबीएस एमएस सर्जन है. इतनी छोटी सी उम्र में उसका नाम शहर के बढ़िया सर्जन्स में शुमार हो चुका है. उसके पेरेंट्स के कुल-गोत्र और जाति से हमें क्या लेना देना?

परिन.. हमारे लिए कुल-गोत्र और जाति बहुत मायने रखती है. अगर उसमें कोई भी ऊंच-नीच हुई तो बेटा, वो हमारे घर की बहू बन कर नहीं आ सकती.

क्षमा जी, आप हमारी और उनकी मुलाकात करवा दीजिए. यह शादी उसके बाद ही होगी. होने वाली समधन के ये दकियानूसी खयालात सुन कर क्षमा जैसे आसमान से गिरीं.

आशा जी, इसके माता पिता तो बरसों पहले दिल्ली छोड़ कर कहाँ गए, मुझे नहीं पता. तो अपने कान्टैक्ट्स से उनके बारे में पता लगाइए और हमें बताइए.

डॉक्टर क्षमा, उसके पति और अन्विता ने मायूस मन मेहमानों को विदा किया. दोनों पति-पत्नी ने अपने अपनेकान्टैक्ट्स से अन्विता के पेरेंट्स का सुराग लगाने की कोशिश की, लेकिन कुछ पता नहीं चला.

उस दिन क्षमा अन्यमनस्क किसी पत्रिका को उलट-पलट रही थी कि कब पुरानी यादों का सैलाब उसे अपने साथ बहा कर ले गया, उसे एहसास तक न हुआ.

आज से करीब तीस बरस पहले वह अपने अस्पताल कक्ष में एक के बाद एक मरीज देख रही थी. तभी अपनी बारी पर कृशकायारत्ना उनके सामने रखे स्टूल पर आ कर बैठ गई और उसे अपनी रिपोर्ट दिखाई. उसे देख कर उसने उससे कहा, रत्ना, तुम फिर से प्रेग्नेंट हो गई हो. मेरे खयाल से तुम्हारे पहले से ही तीन बच्चे हैं ना?

यह सुनते ही रत्ना उससे बोली, डॉक्टर साहब, मुझे यह बच्चा नहीं चाहिए. पहले ही लड़के के चक्कर में मेरे इतने बच्चे हो गए. आप मेरा अबॉर्शन कर दो.

क्षमा ने उसके खून की जांच की रिपोर्ट देख कर कहा, नहीं, मैं तुम्हारा अबॉर्शन नहीं कर सकती क्यों कि तुम्हारे शरीर में खून की सख्त कमी है.

डॉक्टर साहब, मुझे ये बच्चा नहीं चाहिए. कुछ भी करके इसे गिरा दीजिए.

अगले ही दिन जब रत्ना का पति रमेश उसके क्लीनिक आया, निःसंतान क्षमा ने उससे उसके होने वाले बच्चे को गोद लेने की बात कही. इस प्रस्ताव पर रमेश की आँखें चमक उठीं और उसने छूटते ही उससे कहा, डॉक्टर मैडम, इसकी एवज में कितने रुपये दोगी?

कितने चाहिए?

कम से कम पच्चीस लाख.

पच्चीस लाख! मैं तुम्हें पंद्रह लाख जरूर दे सकती हूँ.

चलिए मैडम, न मेरी न आपकी. बीस लाख दे दीजिएगा. हाँ, इससे कम में बात नहीं बनेगी.

ठीक है. डन. मैं अडॉप्शन के लिए अप्लाई करती हूँ.

कुछ माह में अडॉप्शन की पूरी प्रक्रिया खतम हुई. क्षमा ने बीस लाख का चेक रमेश को पकड़ाया और वह मुदित मन उसकी नन्ही बिटिया को कलेजे से लगा अपने घर ले आई.

वह बेहद खुश थी. उन्हों ने बड़े लाड़-चाव से नन्ही बिटिया का नाम अन्विता रखा.

पंखों पर सवार वक्त बीतता गया. अन्विता ने भी अपनी माँ और पापा की तरह एमबीबीएस किया और फिर एमएस करके सर्जन बन गई. पढ़ाई करते करते उसकी जान-पहचान अपने सहपाठी परिन से हुई. धीमे-धीमे दोस्ती प्यार में बदल गई और बात शादी तक जा पहुंची.

तभी आसमान में किसी हवाई जहाज की गड़गड़ाहट ने उसकी विचार-श्रृंखला में व्यवधान डाला और वह अतीत से वर्तमान में लौटी. आज सुबह भावी समधन आशा जी के कहे अल्फ़ाज कानों में गूंजने लगे, अगर उसके कुल-गोत्र और जाति में कोई भी ऊंच-नीच हुई तो बेटा, वो हमारे घर की बहू बन कर नहीं आ सकती. यह सोच कर उसके स्नायु तन उठे.

उधर परिन ने घर लौट अगले दिन बहुत सोच समझ कर अपनी माँ से बात की, माँ, आज-कल के जमाने में ये जाति... कुल... गोत्र... के बारे में सोचना कहाँ तक जस्टीफ़ाइड है. मेरा मानना है कि किसी भी इंसान की पहचान उसके कर्मों से होनी चाहिए न कि उसकी जाति कुल और गोत्र से. आप अभी के अभी अन्विता की मौम को फोन करके उसके पेरेंट्स की तलाश बंद करवाइए. इससे कुछ आना जाना नहीं है, सिवाय फालतू के कौम्पलीकेशन्स के.

नहीं... मेरे जीते जी यह नहीं होगा. मेरे लिए यह जानना बहुत जरूरी है. ठीक है, अगर आप जिद करेंगी तो मैं भी आपका ही बेटा हूँ. आप मेरी बात ध्यान से सुन लीजिए. अगर आपने मेरी शादी अन्विता से नहीं की तो मैं किसी और लड़की से शादी नहीं करूंगा और लंदन चला जाऊंगा. मैं आज ही अभी वहाँ की जनरल मेडिकल काउंसिल में रजिस्ट्रेशन के लिए अप्लाई करता हूँ. कहते हुए परिन अपने लैपटॉप पर बैठ गया.

बेटे की ये बातें सुन कर अतीव घबराहट से उसकी माँ के हाथ-पैर ठंडे हो गए और उसने अपना आखिरी ब्रह्मास्त्र चलाया, बेटा, अगर अन्विता के पेरेंट्स नीची जात के हुए तो क्या होगा? अपनी जात-बिरादरी को इस बात की भनक भी लग गई तो वो हमारा जीना मुहाल कर देंगे. बेटा मैं तेरे आगे हाथ जोड़ती हूँ, प्लीज, अन्विता के माँ-बाप की तलाश करवाने दे.

नहीं, अगर आप उनकी तलाश करवाने के लिए अड़ीं तो आप मुझे खो देंगी. परिन ने अपना लैपटॉप खोल लिया था और उसके सामने सौम्य-सलोनी अन्विता की मुस्कुराती फ़ोटो आ गई. उसी के साथ उसके साथ बिताए समय की मीठी यादों ने अकस्मात उसे अपने आगोश में ले लिया.

कल रात को ही तो अन्विता ने उससे फ़ोन पर कहा था, तुम मेरे पूरे वजूद में समा गए हो. अब तुमसे अलग होकर जिंदगी बिताने की मैं सोच भी नहीं सकती. परू, कुछ करो यार. अब तुमसे अलग हो कर तो मैं जी ही नहीं पाऊँगी.

ठीक यही हाल मेरा है, अनू, बुदबुदाते हुए परिन ने लैपटॉप पर नया टैब खोला था जीएमसी की साइट पर रजिस्ट्रेशन का प्रोसेस शुरू करने के लिए. रजिस्ट्रेशन के लिए करीब 450 पाउंड यानि लगभग पैंतालीस हजार की फीस भरनी थी.

माँ, फ़ाइनल बता दो, आप अन्विता के लिए तैयार हो या नहीं. रजिस्ट्रेशन के लिए मैं लगभग पैंतालीस हजार का पेमेंट कर रहा हूँ. ठीक है बेटा, जो करना है कर. तुझ से आज तक कोई जीता है जो मैं जीतूँगी? धार धार बहते आंसुओं के साथ मलिन-मुख माँ ने कहा. याहू... माँ की बात सुन परिन खुशी से झूम उठा.

आँखों की चिलमन में प्रेयसी के साथ सुखद साझा जिंदगी के सतरंगे ख्वाब कौंध उठे.

क्लास by बड़े भाई

...तो सोचिये, हम और आप गिनती में भी कहाँ होंगे

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

शहर से गाँव ले जाती बसों का चाहे इंजन काम करे न करे लेकिन उनका संगीत संयंत्र (म्यूजिक सिस्टम) हमेशा दुरुस्त रहेगा और जो पुराने सदाबहार गानों से पूरी बस को सराबोर रखेगा. लोगों को यात्राएं पता ही नही चलती. इसी से मुझे एक घटना याद आ रही है. बात कुछ ऐसी थी कि एक बार मैं ऐसी ही बस में (जैसा कि ऊपर बताया) शहर से अपने गाँव जा रहा था. उसी बस में ठीक मेरे बगल की सीट में बैठकर लगभग 18 -19 साल का एक लड़का भी यात्रा कर रहा था. उस समय हमेशा की तरह बस में किशोर कुमार जी का चर्चित गाना 'मेरे महबूब क़यामत होगी, आज रुसवा तेरी गलियों में मोहब्बत होगी' जो कि उन्हीं पर फिल्माया गया था, बज रहा था. मैंने उस लड़के से बस यूँ ही पूछा, गाना कैसा है ? उस लड़के का जवाब बहुत बड़ा सत्य उजागर करता है .

उस लड़के ने कहा - संदीप भईया, गाना तो अच्छा है लेकिन सनम (वर्तमान में प्रतिष्ठित चर्चित बैंड) की आवाज में इस गाने की कुछ और ही बात है . इनसे इतना मजा नही आ रहा है. सोचिए, सदाबहार गायक किशोर कुमार जी के लिए ऐसी प्रतिक्रिया, जिनके जैसा अंदाज लाने का सपना हर गायक देखता हो.

यह आपको और हमें यह बताता है कि दौर किस तरह बेहद खास को भी बेहद आम कर सकता है .तो हम आप क्या हैं.

हम कभी यह दावा नही कर सकते कि हम हमेशा प्रासंगिक रहेंगे या हमेशा ताकतवर रहेंगे या जो भी रुतबा आज है वैसा ही हमेशा रहेगा भी. कभी नही. चाहे हम आप कितने ही हुनरमंद क्यों हों. नकारे जा सकते हैं. नही नकारे गए तो बहुत अच्छा है. इसलिए छोटे भाई, हम हमेशा यह याद रखें कि जो हमारे पास है उसका आनंद लें, गुमान न पालें, बेहतर करें. जो भी पास हो उसका अपने हिसाब में सार्थक उपयोग करें बाकी दौर पर छोड़ दें. वो अपने हिसाब से ही चुनेगी. जैसे आपने भी चुना है. बाकी अगर काम अच्छा है तो हमेशा ऐसे भी लोग रहेंगे जो आपको सहेजेंगे भी, यह भी एक सच है .बस, यही कहना था.

कथाएं

भागी हुई लड़की

दामिनी सिंह ठाकुर

रजनी का मन कई दिनों से बेचैन था. घर की दीवारें उसे कैदखाने जैसी लगने लगी थीं. हर सुबह जब माँ उसे चूल्हे के पास भेज देती और पिता हर बार 'लड़कियों का काम घर तक ही अच्छा लगता है' कहकर उसे दबा देते, तब उसके भीतर कुछ टूट जाता.

पढ़ाई में तेज़ होने के बावजूद उसे आगे पढ़ने की इजाज़त नहीं मिली. पड़ोस की सहेली जब कॉलेज जाती तो रजनी की आँखें भर आतीं. उसे लगता जैसे उसके पंख काट दिए गए हों.

इन सबके बीच राज उसकी ढाल बना. गाँव का वही नौजवान जो उसे समझता था, उसकी बात सुनता था. राज ने ही कहा था—

रजनी, अगर तुम्हें अपनी पहचान बनानी है तो हिम्मत करनी होगी. समाज क्या कहेगा, इस डर से जीने का क्या मतलब?

यही शब्द उसके भीतर गूंजते रहे.

उस रात जब घर में सब सो गए, रजनी चुपचाप अपने कमरे से निकल आई. हाथ में छोटा सा बैग था, आँखों में ढेरों सपने और होठों पर एक नाम—राज.

सुबह की पहली किरणों के साथ वह राज से मिली. दिल में उमंग का सैलाब था.

राज! देखो, आज मैं उस कैदखाने से आज़ाद हो गई हूँ. छोड़ आई हूँ उन दकियानूसी बंदिशों को. अब मैं स्वतंत्र हूँ उन सारे सामाजिक बंधनों से. जहाँ ले जाओगे, मैं तुम्हारे साथ चलूँगी. अपने प्रेम को मैं कभी झूठा साबित नहीं होने दूँगी.

रजनी ने राज के गले में बाँहें डालकर बड़ी बेफ़िक्री और स्वच्छंदता से कहा.

लेकिन राज की आँखों में चमक नहीं थी. वह चुप रहा.

कुछ बोलते क्यों नहीं, राज? अब तक तो पूरे गाँव में हंगामा मच गया होगा कि रजनी घर से भाग गई है. तुम्हारी चुप्पी मुझे डरा रही हैज्कुछ तो कहो.

राज ने गहरी साँस ली, लेकिन शब्द उसके गले में ही अटक गए.

तभी दूर से गाँववालों की भीड़ की आवाज़ें आईं.

हाय रे! बेचारे का क्या हाल हो गया. बड़ा गर्व था उसे अपनी बेटी पर. आज उसी बेटी की वजह से उसे आत्महत्या करनी पड़ी.

सच कहते हो भाई, यही तो है. एक भागी हुई लड़की न जाने कितनी बेटियों की आज़ादी छीन लेती है.

यह सुनते ही रजनी के कदम जैसे ज़मीन में धँस गए. उसकी साँसें रुक-सी गईं. उसे लगा मानो पूरा आकाश उसके ऊपर ढह पड़ा हो.

आजादी का जो मधुर स्वाद उसने सोचा था, वह पलभर में कड़वी सज़ा बन गया.

राज ने उसकी ओर देखा, लेकिन उसकी आँखों में अब सवाल थे—क्या यही रास्ता था? क्या किसी की जान की कीमत पर आज़ादी हासिल की जा सकती है?

रजनी निःशब्द रह गई. उसकी आज़ादी उसके पिता की साँसें निगल चुकी थी. और समाज? समाज तो अब और भी मज़बूती से हर बेटी की उड़ान पर पहरे बिठा देगा. रजनी के मन में एक ही विचार गूंजता रहा

क्या मैं सचमुच आज़ाद हुई हूँ? या मैंने उन सबकी बेड़ियाँ और कस दीं, जो मेरे जैसी उड़ना चाहती थीं?

गृहस्थी का गणित

संध्या पांडेय

सामने के घर में रहने वाले दादाजी संसार छोड़कर चले गए!दादी को घर छोड़कर जाना पड़ रहा है.

क्या करें? मजबूरी है बेटे का परिवार और रोजगार दोनों ही बाहर है .ऐसे में दादी को यहां अकेला तो नहीं छोड़ा जा सकता. दादी जाने से पहले अपने सब सामान को व्यवस्थित रखना चाहती है.बरसों बरस की गृहस्थी है, ऐसे ही तो नहीं नष्ट होने देगी.

बच्चे कहते हैं कि दादी फेंको इस पुराने सामान का क्या उपयोग है. दादी अपनी आँखों के सामने अपनी गृहस्थी की दुर्दशा नहीं देख पा रही है. पर क्या करें? कुछ फेंक दिया, कुछ दान दे दिया और कुछ बेच दिया.

फिर भी घर पूरा खाली नहीं हुआ. चिढ़कर बेटा कहने लगा -अम्मा मरने के बाद तुम्हें हटाने में, फेंकने में इतना वक़्त नहीं लगेगा जितना समय तुम्हारे इस सामान को फेंकने में लग रहा है. दादी अपने आँचल से आँसू पोंछती हुई बोलीं -- नहीं रे! ये गृहस्थी तेरी उम्र से भी बड़ी है.तेरे बाबा को और मुझे इसका तिनका तिनका जोड़ने में पूरे साठ बरस लग गए. टूटने में तो साठ मिनट भी नहीं लग रहे. यही संसार है बेटा, अपनी ग्रहस्थी से सबको प्यार होता है. जो हमने जोड़ा उसे तुम तोड़ रहे जो तुम जोड़ोगे उसे तुम्हारे बच्चे तोड़ेंगे.

खूशबू- बदबू

रेखा शाह आरबी

रामू सब्जी का ठेला लेकर कॉलोनी में पहुंचा और आवाज लगाकर सब्जियां बेचने लगा. मिसेज शर्मा के घर के सामने पहुंचा तो देखा मिसेज शर्मा गली में आवारा घूमने वाली गाय को डंडे से मार कर भगा रही थी. और उनके पीछे खड़े साथ में उनके विदेशी नस्ल के कुत्ते गाय के ऊपर भौंक रहे थे. तो वह बोल पड़ा- मैडम क्यों गाय को मार रही है वह तो बेचारी कचरे में अपना भोजन ढूंढ रही है बेजुबान जानवर है.

अरे तुम नहीं जानते यह खाती भी यहीं पर है और हर तरफ गोबर करके गंदा कर देती है जिसे मुझे साफ करना पड़ता है. अब रामू क्या ही मैडम कोई जवाब देता,

लेकिन यह सारा तमाशा देख रहा . रोज दिन मोहल्ले में ही भीख मांगने वाला एक भिखारी बोला-अरे रामू यह बड़े लोग हैं इन्हें गाय के गोबर साफ करने से बदबू आती है और कुत्ते के पोट्टी से खुशबू आती है.

हट्टे -कट्टे और मोटे -तगड़े कुत्तों की तरफ देखते हुए बोला. उसका जवाब सुनकर मैडम भनभना उठी.

कविता

बीच के बिच्छू सी

वंदना गुप्ता

तुम्हारी दुनिया में
अतिरिक्त मैं
नहीं अट पायी
नहीं सीख पायी वतन में रहने के हुनर
नहीं घुलमिल पायी दूध में शक्कर की तरह
फिर अतिरिक्त तो होना ही था

मैं लायी थी साथ अपनी सहजता, अपनापन, बहनापा
तुम्हारी दुनिया को नहीं था स्वीकार्य
इन शब्दों के लिए नहीं थी अतिरिक्त जगह भी
ऐसे में निर्वासन तय था

मैं हाशिये पर खड़ी तक रही थी
देख रही थी तुम्हारे तमाम द्वंद फंद
और सोच रही थी
मैं किस दुनिया की हूँ?

केवल तुम्हारे लिए ही नहीं
जिन्दगी में आये हर पहलू, हर अवसर, हर मनुष्य के लिए
सदा ही रही अतिरिक्त मैं
अपनी दुनिया, अपने वजूद और अपने होने के त्रिभुज में फंसी मैं
अपनी अतिरिक्तता से संवाद करूँ भी तो कैसे
जब अतिरिक्त होना ही मेरी नियति है
अतिरिक्त संवाद नहीं किया करते
अतिरिक्त की प्रमेय को हल करने के सूत्र नहीं हुआ करते
बस यही समझने की दिशा में अग्रसित मैं
जान गई हूँ खेल में बीच के बिच्छू सी अपनी उपस्थिति

पुस्तक चर्चा

मनोभावों की सहज प्रस्तुति-देहरी पर सजे ख्वाब

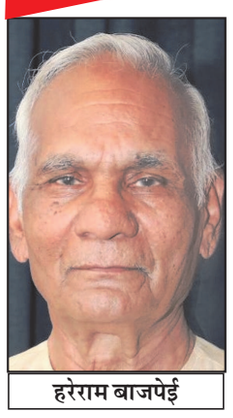

हरेराम बाजपेई

शाम की आहट होते ही चली आऊंगी, चांदनी बन के जीवन में बिखर जाऊंगी.% जिंदगी में उत्साह, उमंग और विश्वास को जगाती ये पंक्तियां तनुजा चौबे की हैं, जिन्होंने अपने मधुर प्रेम भरे सपनों (ख्वाबों) को देहरी पर सजाकर अल्पना की तरह नहीं, वरन् उन्हें मूर्त रूप भी दिया है.

यह कृति कई स्वरूपों में, अर्थों में, बाकी कविता संग्रहों से भिन्न है—जिनमें परंपरागत- प्रकृति, देवता, माता-पिता, बेटी, तिरंगा झंडा, राष्ट्र आदि से अलग हटकर, 111 रचनाओं की मोतियों के रूप में अनुमय हार बनाया गया है. प्रेम, मोहब्बत, इश्क, शिकवा- शिकायत, बनते-टूटते सपने, जिंदगी का फलसफा आदि सभी को करीने से सजाया गया है. कहीं भी न तो शब्दकोश देखना पड़ता है.

तनुजा जी की विचारधारा गहराइयों तक जाती है, तो आसमान भी छूती है. रचना का शीर्षक प्रथम पंक्ति में है; कहीं भी दोहराव नहीं हुआ.

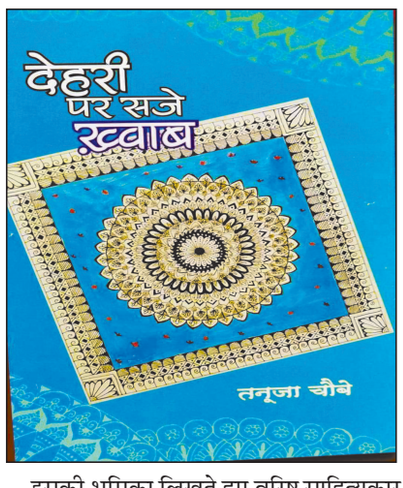

इसकी भूमिका लिखते हुए वरिष्ठ साहित्यकार सूर्यकांत नागर लिखते हैं कि इस संग्रह का मुख्य स्वर प्रेम, माधुर्य, सौंदर्य और श्रृंगार का है. इसका यह अर्थ नहीं कि जीवन के अन्य प्रसंग उपेक्षित हैं. संग्रह की रचनाएँ स्वत:स्फूर्त हैं. सायास प्रयास नहीं हैं, मनोभावों की सहज प्रस्तुति है. रचनाकार की जैसी सोच, संवेदनाएँ और भावनाएँ होती हैं, उसकी वैसी ही अभिव्यक्ति होती है. वे आगे लिखते हैं कि तनुजा अंतर्दृष्टि की कलमकार हैं. उनके काव्य में जीवन का स्पंदन है. अपने विचारों को बहुसंख्य तक पहुँचाने की अकुलाहट उन्हें कलमबद्ध करने को बाध्य करती है.

खुद लेखक तनुजा चौबे अपनी बात में कहती हैं कि पिता को खोने का जितना भी दर्द मिला, डायरी में उतरने लगा. लिखकर अच्छा महसूस होता. डायरी के शब्द लयबद्ध होने लगे और कविता का सृजन होने लगा. उनके स्नेह की अनुपस्थिति और असुरक्षा जब सताती, कलम और डायरी मेरा अकेलापन खत्म करते. मैंने लिखना तो किशोरावस्था में ही शुरू कर दिया था. बढ़ती उम्र के सपनों ने इसे सिंचित एवं पल्लवित किया.

प्रकृति के साथ जोड़ते हुए दुख, सुख, प्रेम, उत्तेजना, स्वप्न बुनना अद्भुत लगा.

कहां लोग निभा जाते हैं तो उम्र, कोई बिखर जाता है एक क्षण में-तनुजा की इन पंक्तियों में ज्ञान, वैराग्य, तुलसी-कबीर के दर्शन होते हैं.

प्रेम की पराकाष्ठा देखो—
पहुंचा दिया पहाड़ों तक!
मिल जाए मोक्ष, उन्हें भी तर्पण कर दो यादों का

अपने चेहरे पर सदैव मुस्कुराहट लिए, दिखावे से दूर—नाम के अनुरूप हैं तनुजा की तरनित तनुजा- तट, तमाल, तरुवर बहु छाए.

और यह पंक्तियां -

ख्वाबों को देहरी पर सजा कर दस्तक देते रहे हम;
खड़े-खड़े दरवाजे पर भीड़ हो गए हैं हम.

देहरी पर सजे ख्वाब (कविता संग्रह)
तनुजा चौबे
कीमत-180 रुपए
श्री सर्वोत्तम प्रकाशन इंदौर

कविता

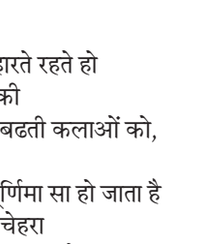

रश्मि शर्मा

तुम्हारे कदमों की आहट पर

सुना है
तुम निहारते रहते हो
चंद्रमा की
घटती-बढती कलाओं को,

कभी पूर्णिमा सा हो जाता है
तुम्हारा चेहरा
कभी अमावस से
विचारों में खो जाते हो,

फिर चांदनी रातों में
कहां खो जाते हो ?
अक्सर तुम
ठहर क्यों जाते हो

फिर मुड़कर क्या देखते हो
दूर, रास्तों की तह तक
क्यों बिछा देते हो
नज़रों का सूनापन !

मैंने मौन होकर
मंत्र सा उच्चारण सुना है
तुम्हारे विरह के श्लोकों का,
क्या तुमने की है कभी महसूस?

आम की मंजरियों की खुशबू
और बासंती महक
घोल देती है
दूर-दूर तक इश्क,

जहां तुम और मैं
मैं और तुम मिलकर
उठा लेते हैं
डालियों से गिरे प्रेम-पुष्प !

हां! मैं भी करती रहती हूं
घंटों तक तुमसे बातें
तुम्हारा मुस्कुराना
तिथियों की पूर्णता प्रकट करता है

और मैं, मेरे हाथों की लकीरों पर
तुम्हारी मौजूदगी
शब्दों में बांधकर
लगा लेती हूं सीने से !

आओगे ना तुम
मैंने फूलों से कह रखा है
बरसने को,
तुम्हारे कदमों की आहट पर !

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी